

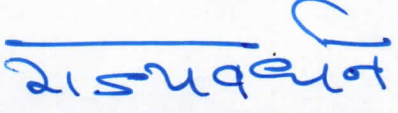


संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि विगत अनेक वर्षों से सेवा कार्यो में सक्रिय संत ईश्वर फाउण्डेशन और राष्ट्रीय सेवा भारती संयुक्त रूप से सेवा सम्मान समारोह का आयोजन करने जा रहे हैं। सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े समाज के उत्थान में सेवारत तपस्वी कर्मवीरों के सम्मान से सेवाभाव को निश्चय ही प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

भारतीय संस्कृति में 'सेवा परमो धर्मः' और 'जहां करुणा है, वहां ईश्वर का वास है' की अनेकानेक प्रकार से महत्ता व्यक्त की गई है। गरीबों और पीड़ितों के प्रति करुणा और दया ही ईश्वर के प्रति हमारा कर्तव्य है। यदि जीवमात्र के प्रति स्नेह और निष्काम भाव से सेवा करने का भाव हो, तो हम भगवद् कृपा के पात्र बनते हैं। निष्काम भाव से सेवा करने से अंतःकरण भी शुद्ध होता है। यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो किसी भी परिस्थिति में संतुष्टि और सुख की प्राप्ति होती है। यही सेवा भाव है।

संत ईश्वर सेवा सम्मान के अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका 'सेवार्चन' के लिए मेरी अग्रिम शुभकामनाएं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह स्मारिका सेवारत तपस्वी कर्मवीरों और सेवाभाव के प्रति जागरूकता उत्पन्न करेगी और सार्थक होगी।


(कर्नल राज्यवर्धन राठौड़)